



# डी आर डी ओ

डी आर डी ओ की मासिक गृह पत्रिका

## समाचार

### डी आर डी ओ द्वारा पंछी का पहला सफल उड़ान परीक्षण

सामरिक प्रयोग हेतु मानवरहित वायुयान (यू ए वी) निशांत के पहियायुक्त संस्करण पंछी ने 24 दिसम्बर 2014 को अपनी पहली सफल उड़ान भरी। कम्प्यूटर आधारित बाह्य प्रणाली से संचालन निर्देश प्राप्त करके इस वायुयान ने कोलार स्थित रनवे से 9.30 बजे उड़ान भरी और 25 मिनट तक हवा में रहने के पश्चात सुरक्षित और सफलतापूर्वक भूमि पर उतर आया। वायुयान ने उड़ान के प्रत्येक चरण पर अत्यधिक उत्कृष्ट संचालन गुणवत्ता का प्रदर्शन किया।



पंछी का पहला सफल उड़ान परीक्षण।

इस अंक में

- वायुसेना प्रमुख द्वारा कम्प्यूटरीकृत पायलट चयन प्रणाली का उद्घाटन
- तेजस हेतु स्वदेश निर्मित ऑन बोर्ड ऑक्सीजन उत्पादन प्रणाली आधारित समेकित जीवन सहायक प्रणाली
- पिनाका मार्क-II आर्टिलरी रॉकेट का सफल उड़ान परीक्षण
- द्विभाषी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन
- नए प्रशासनिक भवन का उद्घाटन
- आर ए सी में कैम्पस सेलेक्शन की ऑनलाइन व्यवस्था
- तेजस में नई पीढ़ी के इलेक्ट्रॉनिक युद्ध उपकरण संस्थापित
- स्थापना दिवस समारोह
- डी टी आर एल समाचार पत्र का विमोचन
- कर्नाटक राज्योत्सव
- मानव संसाधन विकास गतिविधियाँ
- स्वच्छ भारत अभियान
- मोनोग्राफ का विमोचन
- संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निरीक्षण
- पुरस्कार
- खेलकूद समाचार
- डी आर डी ओ की विभिन्न प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं में पधारे अतिथिगण

वैमानिकी विकास स्थापना (ए डी ई), बेंगलूरु द्वारा आठ महीनों के रिकार्ड समय में निर्मित किए गए इस पहियायुक्त संस्करण को रक्षा बलों द्वारा लगभग 500 मीटर के सीमित/अर्ध निर्मित रनवे का प्रयोग करके निगरानी के लिए आवश्यक समझे जाने वाले सेक्टर में अत्यधिक कम समय में भेजा जा सकता है। यह पहियायुक्त संस्करण चार घंटे से अधिक समय तक हवा में रह सकता है और 165 किलोमीटर की दूरी से भूमि पर स्थित मोटर साइकिल जितने छोटे किसी भी वाहन की पहचान कर सकता है।



अपना पहला उड़ान भरने से पूर्व रनवे पर दौड़ता हुआ पंछी।

परम्परागत रूप में उड़ान भरने और भूमि पर उतरने की प्रक्रिया के सफलतापूर्वक प्रदर्शन के बाद इस वायुयान में आवश्यकता के अनुसार रचनात्मक बदलाव लाया जाएगा ताकि यह और अधिक समय तक हवा में रह सके और बेहतर निष्पादन कर सके।

### वायुसेना प्रमुख द्वारा कम्प्यूटरीकृत पायलट चयन प्रणाली का उद्घाटन

वायुसेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल अरूप राहा, पी वी एस एम, ए वी एस एम, वी एम, ए डी सी ने डी आर डी ओ द्वारा विकसित कम्प्यूटरीकृत पायलट चयन प्रणाली (सी पी एस एस) का 2 वायुसेना चयन बोर्ड, मैसूर में 28 नवम्बर 2014 को उद्घाटन किया। इस अवसर पर डी आर डी ओ और भारतीय वायुसेना के उच्च पदस्थ अधिकारीगण उपस्थित थे। डॉ के तमिलमणि, विशिष्ट वैज्ञानिक (डी एस), महानिदेशक (ऐरो), डी आर डी ओ तथा डॉ मानस के मंडल, विशिष्ट वैज्ञानिक, महानिदेशक (जीवन विज्ञान) डी आर डी ओ एवं एयर मार्शल एस सुकुमार, ए वी एस एम, वी एम, एयर आफिसर-इन-चार्ज, कार्मिक, वायु मुख्यालय इस अवसर पर उपस्थित हुए विशिष्ट अतिथियों में



सी पी एस एस के कॉकपिट में वायुसेना प्रमुख राहा।

शामिल थे। इस अवसर पर 1 वायुसेना चयन बोर्ड (ए एफ एस बी), देहरादून और 4 ए एफ एस बी वाराणसी में ए एफ नेट की सहायता से लाईव स्ट्रीमिंग द्वारा नई चयन प्रणाली की भी शुरुआत की गई। बोर्ड के अध्यक्षों

एयर क्रेमोडोर ओ पी तिवारी, ए ओ सी<sup>2</sup> ए एफ एस बी, मैसूर; एयर क्रोमोडोर एस डब्ल्यू गोसवाड़े, वी एम, ए ओ सी, 4 ए एफ एस बी, वाराणसी तथा एयर क्रोमोडोर नितिन साठे ए ओ सी, ए एफ एस बी देहरादून ने अपने बोर्डों में हुई प्रगति के बारे में संक्षेप में बताया। डॉ के रामचंद्रन, निदेशक, रक्षा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान (डी आई पी आर) और श्री पी श्रीकुमार, विशिष्ट वैज्ञानिक, निदेशक, ए डी ई, बंगलूरु ने वायुसेना प्रमुख को इन बोर्डों द्वारा प्राप्त की गई उपलब्धियों तथा मैसूर, देहरादून एवं वाराणसी स्थित तीनों बोर्डों में सी पी एस एस को स्थापित किए जाने के बारे में अवगत कराया।

अपने उद्घाटन भाषण में वायुसेना प्रमुख राहा ने कहा, “कम्प्यूटरीकृत पायलट चयन प्रणाली (सी पी एस एस) एक आधुनिक सुविधा है तथा इसे विकसित करने के

लिए डी आर डी ओ, भारतीय वायुसेना एवं रक्षा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान (डी आई पी आर) द्वारा एक टीम के रूप में कार्य करते हुए अत्यधिक योगदान किया गया है तथा इन तीनों संगठनों ने एकजुट होकर काम करते हुए एक ऐसी प्रणाली विकसित की है जो युवा कार्मिकों में वायुयान उड़ाने की सक्षमता की जांच करने के लिए एक उपयोगी प्रणाली है। वायुसेना प्रमुख ने अपने भाषण में आगे बोलते हुए कहा, “यह हमारे हवाई क्षेत्र की सुरक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। केवल हमारे सर्वोत्कृष्ट पायलट ही भारतीय वायुसेना को दक्षिण-पूर्वी एशिया में एक शक्ति के रूप में स्थापित करने के लिए इसमें शामिल की जा रही अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी की पूर्ण क्षमता का संपूर्ण रूप में से प्रयोग कर सकते हैं।”

## तेजस हेतु स्वदेश निर्मित ऑन बोर्ड ऑक्सीजन उत्पादन प्रणाली आधारित समेकित जीवन सहायक प्रणाली (आई एल एस एस-ओ बी ओ जी एस)

तीव्र गति से अत्यधिक ऊंचाई पर उड़ान भरने वाले युद्धक वायुयान तेजस के चालक दल ने सदस्यों को लंबे समय तक हवा में रहने में सक्षमता प्रदान करने की दृष्टि से उन्हें अधिक शरीर क्रियात्मक संरक्षण प्रदान करने के लिए रक्षा जैव अभियांत्रिकी तथा चिकित्सा. इलैक्ट्रो प्रयोगशाला (डेबेल), बंगलूरु द्वारा अभिकल्पित और विकसित तेजस हेतु स्वदेश निर्मित ऑन बोर्ड ऑक्सीजन उत्पादन प्रणाली आधारित समेकित जीवन सहायक प्रणाली (आई एल एस एस-ओ बी ओ जी एस) डेबेल के निदेशक, डॉ वी सी पदकी, उत्कृष्ट वैज्ञानिक द्वारा युद्धक वायुयानों के कार्यक्रम निदेशक तथा वैमानिकी विकास एजेंसी (ए डी ए), बंगलूरु के निदेशक, डॉ पी एस सुब्रमण्यम, विशिष्ट वैज्ञानिक को सौंपी गई। इस समारोह में डॉ के तमिलमणि, विशिष्ट वैज्ञानिक, महानिदेशक (ऐरो), डी आर डी ओ तथा डॉ मानस के मंडल, विशिष्ट वैज्ञानिक (जीवन विज्ञान), डी आर डी ओ तथा बंगलूरु स्थित सभी प्रयोगशालाओं के निदेशक भी उपस्थित हुए।

टीम को इस उपलब्धि पर बधाई देते हुए रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार, रक्षा अनुसंधान तथा विकास



विभाग के सचिव एवं डी आर डी ओ के महानिदेशक डॉ अविनाश चंदर ने इस उपलब्धि की सराहना की और कहा कि तेजस हेतु स्वदेश निर्मित ऑन बोर्ड ऑक्सीजन उत्पादन प्रणाली आधारित समेकित जीवन सहायक प्रणाली (आई एल एस एस-ओ बी ओ जी एस) को विकसित करना एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है और यह हमारे

सशस्त्र बलों को जटिल प्रौद्योगिकियां उपलब्ध कराने के प्रति डी आर डी ओ की प्रतिबद्धता को व्यक्त करता है।

बहुविध प्रणालियों को विकसित करने के लिए एकजुट होकर काम करने की महत्ता पर बल देते हुए डॉ मंडल ने कहा, “बहुविषयी या बहुविध प्रक्रियाओं को अपनाकर ही हम एक अत्यंत उपयोगी प्रौद्योगिकी प्रस्तुत करने में सक्षम हो सकते हैं। व्यक्ति परस्पर मिलकर टीम का निर्माण नहीं कर सकते बल्कि टीम व्यक्ति का निर्माण करती है।”

डॉ तमिलमणि ने पारस्परिक समन्वय के महत्व पर बल दिया तथा युवा वैज्ञानिकों की टीम द्वारा किए गए समर्पित कार्य की प्रशंसा करते हुए कहा, “भावी वायुवाहित मंचों के लिए तेजस हेतु स्वदेश निर्मित ऑन बोर्ड ऑक्सीजन उत्पादन प्रणाली आधारित समेकित जीवन सहायक प्रणाली (आई एल एस एस-ओ बी ओ जी एस) हेतु प्राप्त की गई यह नई प्रौद्योगिकीय उपलब्धि अब हमारी सक्षमता के भीतर है।”

डॉ सुब्रमण्यम ने तेजस हेतु स्वदेश निर्मित ऑनबोर्ड ऑक्सीजन उत्पादन प्रणाली आधारित समेकित जीवन सहायक प्रणाली (आई एल एस एस-ओ बी ओ जी एस) को विकसित करने में सहयोग करने वाले सभी प्रतिभागियों की भूमिका की सराहना की। वायुयान के भीतर उपलब्ध सीमिति स्थान में ही संस्थापित करने के लिए अभिकल्पित तेजस हेतु स्वदेश निर्मित ऑनबोर्ड ऑक्सीजन उत्पादन प्रणाली आधारित समेकित जीवन सहायक प्रणाली (आई एल एस एस-ओ बी ओ जी एस) प्रेशर स्विंग एडजोबेशन (पी एस ए) पर आधारित प्रौद्योगिकी की सहायता से अन्य संघटकों से ऑक्सीजन को पृथक करके वायुयान के इंजन से निस्सरित वायु का प्रयोग करने वाले द्रव ऑक्सीजन-आधारित प्रणाली के स्थान पर प्रयोग में लाई जाएगी। चालक दल को निरंतर श्वसन वायु उपलब्ध कराने के लिए अभिकल्पित तेजस हेतु स्वदेश निर्मित ऑन बोर्ड ऑक्सीजन उत्पादन प्रणाली आधारित समेकित जीवन सहायक प्रणाली (आई एल एस एस-ओ बी ओ जी एस) प्रौद्योगिकी चालक-दल को हवा में असीमित समय तक रहने का लाभ उपलब्ध कराती है और द्रव ऑक्सीजन प्रणाली जिसमें चालक दल वायुयान में द्रव ऑक्सीजन की भंडारण क्षमता के अनुसार ही हवा में रह सकता है, से भिन्न प्रकार की है। इसके अतिरिक्त,

इस प्रणाली में अधिक सुरक्षा, कम संभार तंत्र और पर्याप्त कम प्रचालनात्मक लागत अंतर्निहित है। उन्नत तेजस हेतु स्वदेश निर्मित ऑन बोर्ड ऑक्सीजन उत्पादन प्रणाली आधारित समेकित जीवन सहायक प्रणाली (आई एल एस एस-ओ बी ओ जी एस) उड़ान के दौरान हाइपॉक्सिया अर्थात ऑक्सीजन की कमी के कारण चालक दल पर पड़ने वाले प्रभाव (अधिक उंचाई पर उड़ान और आपात स्थिति में बचाव के दौरान) तथा गुरुत्व में अधिक परिवर्तन की स्थिति में गुरुत्व प्रेरित सचेतनता हानि (जी एल ओ सी) की समस्या का भी समाधान करती है।

इस प्रौद्योगिकी में श्वसन हेतु आक्सीजन उपलब्ध कराने के लिए ऑन बोर्ड ऑक्सीजन उत्पादन प्रणाली (ओ बी ओ जी एस), चालक दल को वांछित प्रवाह और दाब पर श्वसन गैस की आपूर्ति करने के लिए श्वसन रेगुलेटर, गुरुत्व रोधी सूट को वांछित रोधी दाब उत्पन्न करने हेतु उसे फुलाने के लिए एक गुरुत्वरोधी वाल्व (ए जी वी) तथा विभिन्न प्रकार्यों को समन्वित करने वाला एक इलैक्ट्रॉनिक नियंत्रक यूनिट (ई सी यू) निहित है। प्रणाली में श्वसन वायु में ऑक्सीजन की सांद्रता को जांचने के लिए एक सॉलिड स्टेट ऑक्सीजन सेंसर भी लगा हुआ है।

तेजस हेतु स्वदेश निर्मित ऑन बोर्ड ऑक्सीजन उत्पादन प्रणाली आधारित समेकित जीवन सहायक प्रणाली (आई एल एस एस-ओ बी ओ जी एस) में ऐसी अनेक उप-प्रणालियां लगी हुई हैं जो बैक अप/अतिरिक्तता तथा आपात स्थिति में बचाव हेतु जीवन सहायक सुविधाएं उपलब्ध कराती हैं, अब इन सभी का तेजस में भूमि पर उपयुक्तता परीक्षण और तत्पश्चात उड़ान के दौरान परीक्षण किया जाएगा। तेजस हेतु स्वदेश निर्मित ऑन बोर्ड ऑक्सीजन उत्पादन प्रणाली आधारित समेकित जीवन सहायक प्रणाली (आई एल एस एस – ओ बी ओ जी एस) में मिग-29, सुखोई-30 मार्क-1 तथा मिराज-2000 जैसे अन्य भारतीय युद्धक वायुयानों की आवश्यकता के अनुरूप बदलाव लाया जा सकता है। इन परीक्षणों के सफलतापूर्वक पूरा हो जाने पर भारत विश्व के पांच ऐसे विशिष्ट देशों की श्रेणी में शामिल हो जाएगा जिनके पास आई एल एस एस प्रौद्योगिकी है और जो इस प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल में निपुणता प्राप्त हैं।

## पिनाका मार्क-II आर्टिलरी रॉकेट का सफल उड़ान परीक्षण



पिनाका मार्क-II

आयुध अनुसंधान और विकास स्थापना (ए आर ई डी), पुणे द्वारा विकसित किए गए पिनाका मार्क-II आर्टिलरी रॉकेट का प्रमाण तथा प्रायोगिकी स्थापना (पी एक्स ई), बालासोर में 9-12 दिसम्बर 2014 के दौरान सफलतापूर्वक परीक्षण किया गया। रॉकेटों को 20 किलोमीटर से लेकर 60 किलोमीटर तक के विभिन्न रेंजों को कवर करने को लक्षित करके दागा गया। पिनाका मार्क-II अनिर्देशित पिनाका मल्टी बैरल रॉकेट प्रणाली का एक उन्नत संस्करण है जिसमें प्रहार दूरी वर्तमान के 38 किलोमीटर से बढ़ाकर 60 + किलोमीटर की गई है।

इस रॉकेट में ए आर डी ई द्वारा

विकसित उच्च निष्पादन ठोस रॉकेट नोदक प्रणाली तथा छह सपाट फिन विन्यास युक्त उन्नत स्टेबलाइजर प्रणाली संस्थापित की गई है। ऊर्जा नोदक को उच्च ऊर्जा पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला (एच ई एम आर एल), पुणे द्वारा विकसित किया गया है। पिनाका मार्क-II के लिए वर्तमान में प्रयोग में लाए जा रहे स्फोटक शीर्षों और फ्यूजों तथा मौजूदा भू-प्रणालियों को ही प्रयोग में लाया जाता है जिसमें लांचर, लोडर प्रक्षेपक, भरण तथा पुनर्भरण (एल सी आर) व्हीकल, पुनर्भरण व्हीकल (आरवी) तथा बैटरी कमान पोस्ट में मामूली आशोधन की आवश्यकता होती है। पिनाका मार्क-II की 60 किलोमीटर से अधिक दूरी तक प्रहार क्षमता का प्रदर्शन अनिर्देशित रॉकेट आर्टिलरी के क्षेत्र की एक उल्लेखनीय उपलब्धि है।

एक अन्य विशिष्ट उपलब्धि तब हासिल की गई जबकि स्वदेश में विकसित आर्टिलरी रॉकेटों हेतु टर्बो जनरेटर आधारित इलैक्ट्रॉनिक टाइम फ्यूजों से गतिक परीक्षणों के दौरान निर्धारित पैरामीटरों को पूरा करते हुए संतोषजनक रूप में कार्य निष्पादन प्रदर्शित हुआ। इस संपूर्ण मिशन के दौरान कम दूरी से लेकर अधिक दूरी तक की प्रहार क्षमता तथा टर्बो जनरेटर आधारित ई टी फ्यूजों के निष्पादन को कवर करते हुए उड़ान निष्पादन पर प्रमाण तथा प्रायोगिकी स्थापना (पी एक्स ई) तथा एकीकृत परीक्षण रेंज (आई टी आर) के दूरभिति और ट्रैकिंग रडारों द्वारा निगरानी रखी गई तथा ज्ञात हुआ कि परीक्षण के दौरान मिशन संबंधी सभी उद्देश्य सफलतापूर्वक प्राप्त किए जा सके हैं।

## द्विभाषी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन



द्विभाषी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में श्रीमती सुमति शर्मा, वैज्ञानिक एफ, डेसीडॉक; प्रोफेसर मोहन, निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा; श्री सुरेश कुमार जिंदल, निदेशक, डेसीडॉक, दिल्ली; डॉ मानस कुमार मंडल, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं महानिदेशक (जीव विज्ञान); श्री राजेन्द्र कुमार, संयुक्त सचिव, ई-प्रशासन, भारत सरकार तथा श्री फूलदीप कुमार, आयोजन सचिव (बांये से)

रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन (डी आर डी ओ) द्वारा 19-21 फरवरी 2015 के दौरान सूचना प्रौद्योगिकी: कल, आज, और कल विषय पर द्विभाषी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। रक्षा वैज्ञानिक सूचना तथा प्रलेखन केन्द्र (डेसीडॉक), दिल्ली इसकी आयोजक प्रयोगशाला थी। यह सम्मेलन पेंटल स्मृति स्वर्ण जयंती सभागार, वल्लभ भाई पटेल चेस्ट संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली में हुआ। सम्मेलन के लिए विभिन्न राष्ट्रों सहित देश-विदेश के विद्वानों से लगभग 450 आलेख/शोध पत्र प्राप्त हुए, जिनमें से लगभग 270 आलेखों को सम्मेलन में प्रस्तुति हेतु चयनित किया। इन आलेखों/शोध पत्रों को 06 सम्पादित पुस्तकों के रूप में प्रकाशित किया गया है। सम्मेलन में देश-विदेश से लगभग 1000 वैज्ञानिक/अकादमिकगणों ने अपने शोध को राजभाषा हिन्दी में प्रस्तुत किया।

दिनांक 19 फरवरी 2015 को सरस्वती वंदना के साथ उद्घाटन समारोह आरम्भ हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में पधारें श्री राजेन्द्र कुमार, संयुक्त सचिव, ई-प्रशासन, भारत सरकार ने दीप प्रज्वलित कर इस सम्मेलन का विधिवत् उद्घाटन किया। डॉ मानस कुमार मंडल, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं महानिदेशक (जैव विज्ञान) ने उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता की। इस अवसर पर प्रोफेसर मोहन, निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा; श्री सुरेश कुमार जिंदल, निदेशक, डेसीडॉक, दिल्ली तथा श्री फूलदीप



द्विभाषी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के अवसर पर सरस्वती वंदना करते हुए डेसीडॉक परिवार के सदस्य।

कुमार, आयोजन सचिव ने दीप प्रज्वलन में साथ दिया। दीप प्रज्वलन के पश्चात श्री सुरेश कुमार जिंदल, निदेशक, डेसीडॉक ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए सम्मेलन के बारे में पूर्ण जानकारी दी। आपने बताया कि प्राप्त शोध पत्रों में गुणवत्ता के आधार पर 270 शोध पत्रों



द्विभाषी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए डॉ मानस कुमार मंडल, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं महानिदेशक (जीव विज्ञान)।

को चुनकर छह संपादित पुस्तकों के रूप में प्रकाशित किया गया है। इनमें सूचना प्रौद्योगिकियों के विभिन्न आयामों से संबंधित नवीन जानकारी है जो कि जनसाधारण के लिए उपयोगी सिद्ध होगी। सम्मेलन में देश-विदेश के विद्वानों द्वारा 270 मौखिक प्रस्तुतियां एवं 180 पोस्टर प्रस्तुतियां हुईं। इन्हें 28 सत्रों में चार व्याख्यान कक्षाओं में एकसाथ प्रस्तुत किया गया।

इसके पश्चात अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के लिए प्राप्त आलेखों/शोध पत्रों की स्मारिका, तथा सभी 06 पुस्तकों का विमोचन किया गया, जिनके नाम इस प्रकार हैं—

1. सूचना प्रौद्योगिकी : कल, आज, और कल (कुल पृष्ठ 220)  
आई एस बी एन संख्या 978-81-86514-68-9
2. सूचना प्रबंधन (कुल पृष्ठ 244)  
आई एस बी एन संख्या 978-81-86514-69-6
3. सूचना और समाज (कुल पृष्ठ 330)  
आई एस बी एन संख्या 978-81-86514-70-2
4. Electronic Resources and Digital Services (कुल पृष्ठ 256)  
आई एस बी एन संख्या 978-81-86514-72-6
5. Artificial Intellegence and Network Security (कुल पृष्ठ 300)  
आई एस बी एन संख्या 978-81-86514-73-3
6. Managing Information Technology (कुल पृष्ठ 328)  
आई एस बी एन संख्या 978-81-86514-71-9

इसके पश्चात मुख्य अतिथि श्री राजेन्द्र कुमार, संयुक्त सचिव, ई-प्रशासन, भारत सरकार ने ई-प्रशासन के क्षेत्र में भारत सरकार के विभिन्न प्रकल्पों की सारगर्भित जानकारी दी। सम्मेलन के भव्य आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उद्घाटन समारोह के अध्यक्ष, डॉ मानस कुमार मंडल, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं महानिदेशक (जीव विज्ञान) ने कहा कि मानवीय मस्तिष्क सूचनाओं की प्राप्ति, उनका भंडारण, तथा पुनः प्राप्ति किस प्रकार करता है, इन पहलुओं पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर प्रोफेसर मोहन, निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा ने हिन्दी भाषा में कम्प्यूटर पर कार्य कर सकने के विभिन्न उपायों पर प्रकाश डाला। इसके पश्चात एक विदेशी प्रतिभागी, अलैकजेंड्रिया, रोमानिया ने बच्चों द्वारा सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग में बरती जाने वाली सावधानियों पर प्रकाश



द्विभाषी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन पुस्तिकाओं के विमोचन का दृश्य।



द्विभाषी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन की पुस्तिकाएं।



द्विभाषी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए डॉ मानस कुमार मंडल, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं महानिदेशक (जीव विज्ञान)।

डाला। इन्होंने अपने व्याख्यान में रूस की शैक्षणिक व्यवस्था पर प्रकाश डाला। श्री फूलदीप कुमार, आयोजन सचिव ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

इससे पूर्व डॉ मानस कुमार मंडल, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं महानिदेशक (जैव विज्ञान) ने सम्मेलन के दौरान आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। प्रदर्शनी में सूचना प्रौद्योगिकी की 11 विभिन्न अग्रणी कम्पनियों ने अपने उत्पाद प्रदर्शित किए।

प्रथम दिन परिचर्चाओं का आयोजन किया गया, जिसमें देश-विदेश के गणमान्य व्यक्तियों, जैसे प्रोफेसर हुजूर सरन, आई आई टी, दिल्ली; डॉ आर सी गौड़, पुस्तकालयाध्यक्ष, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली; प्रोफेसर मोहन, निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा; ने अपने-अपने अनुभव साझा किए। परिचर्चाओं के दौरान मंच संचालन श्री फूलदीप कुमार, आयोजन सचिव ने किया। दिनांक 19 फरवरी 2015 की शाम एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न रंगारंग प्रस्तुतियां दी गईं।

drdo.gov.in/drdo/pub/samachar/index.html



द्विभाषी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान अपने विचार प्रकट करती हुई विदेशी प्रतिभागी अलैक्जेंड्रिया।



द्विभाषी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान उपस्थित गणमान्य विभूतियां।



द्विभाषी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के अवसर पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम की झलकियां।



सम्मेलन के दौरान कुल 28 सत्रों का आयोजन किया गया, तथा कर्नल बी सी हल्लन, प्रोफेसर ओ पी जांगिड, आई ए एस ई, सरदार शहर, राजस्थान; प्रोफेसर मनोज दुहन, छोटू राम तकनीकी विश्वविद्यालय, हरियाणा; श्री संजय राठी, मीडिया विश्लेषक; प्रोफेसर विमलेश कांति वर्मा; श्री जे एस यादव, वैज्ञानिक जी, डी एम आर एल, हैदराबाद; डॉ एस एन सिंह, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, बेंगलूरु; प्रोफेसर दलेल सिंह दहिया, कुलपति, ओ पी जे एस विश्वविद्यालय, चुरु, राजस्थान; डॉ रामगोपाल, पूर्व निदेशक, रक्षा प्रयोगशाला, जोधपुर; डॉ आर एम सिंह, वैज्ञानिक जी, ईसा, दिल्ली; डॉ जी एस मुखर्जी, वैज्ञानिक एफ, डेसीडॉक, दिल्ली; प्रोफेसर के एल वर्मा, अध्यक्ष, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, नई दिल्ली; प्रोफेसर विमलेश कांति वर्मा; प्रोफेसर हरीश कुमार, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा; डॉ डी डी ओझा, प्रधान वैज्ञानिक, राजस्थान; डॉ मित्रबसु, वैज्ञानिक एफ, इनमास, दिल्ली; डॉ राजीव विज, वैज्ञानिक एफ, इनमास, दिल्ली; डॉ मोहिन्द्र सिंह, भूतपूर्व निदेशक, डेसीडॉक, दिल्ली; श्रीमती विनोद कुमारी, वैज्ञानिक एफ, डेसीडॉक, दिल्ली; श्रीमती सुमति शर्मा, वैज्ञानिक एफ, डेसीडॉक, दिल्ली; श्रीमती वीना मखीजा, वैज्ञानिक एफ, एस एस पी एल, दिल्ली; श्री आर पी सिंह, वैज्ञानिक एफ, एस एस पी एल, दिल्ली; डॉ एस के पाल, वैज्ञानिक एफ, एस ए जी, दिल्ली; श्री संजय द्विवेदी, वैज्ञानिक एफ, सेपटेम, दिल्ली; डॉ संजय कटारिया, जे आई आई टी यू, नोएडा; डॉ धर्मेन्द्र सैनी, प्रमुख, बी वी सी ओ ई, दिल्ली तथा श्रीमती अलका बंसल, वैज्ञानिक ई, डेसीडॉक, दिल्ली ने इनकी अध्यक्षता की।



'तलाश' नामक कविता संग्रह का विमोचन करते हुए श्री फूलदीप कुमार, श्री सुरेश कुमार जिंदल, श्री अशोक कुमार, प्रोफेसर मोहन, प्रोफेसर रोशन लाल रैना, प्रोफेसर दलेल सिंह दहिया, एवं डॉ ओम विकास (बांये से)।



'हमको सताते हैं वो' नामक गीत संग्रह का विमोचन करते हुए श्री फूलदीप कुमार, श्री सुरेश कुमार जिंदल, श्रीमती सुषमा सिंह, श्री अशोक कुमार, प्रोफेसर मोहन, प्रोफेसर रोशन लाल रैना, प्रोफेसर दलेल सिंह दहिया, एवं डॉ ओम विकास (बांये से)।

दिनांक 21 फरवरी 2015 को सम्मेलन का समापन समारोह आयोजित किया गया। समापन समारोह में प्रोफेसर रोशन लाल रैना, आई आई एम, लखनऊ; प्रोफेसर मोहन, निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा; प्रोफेसर ओम विकास, भूतपूर्व निदेशक, आई आई आई टी एम, ग्वालियर; प्रोफेसर दलेल सिंह, कुलपति, ओ पी जे एस विश्वविद्यालय, चुरु, राजस्थान; श्री सुरेश कुमार जिंदल, निदेशक, डेसीडॉक ने अपने विचार व्यक्त किए। समापन समारोह में सभी वक्ताओं ने सम्मेलन की सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त की। इस अवसर पर श्री अशोक कुमार, वरिष्ठ सहायक हिन्दी, डेसीडॉक की दो पुस्तकों, 'तलाश' कविता संग्रह तथा 'हमको सताते हैं वो' गीत संग्रह का भी विमोचन किया गया। समापन समारोह के दौरान मंच संचालन श्री फूलदीप कुमार, आयोजन सचिव ने किया। सम्मेलन के आयोजन सचिवालय के सदस्यों में श्री फूलदीप कुमार, आयोजन सचिव, श्री अनिल कुमार शर्मा, तकनीकी अधिकारी सी, श्री अशोक कुमार, वरिष्ठ हिन्दी सहायक, श्री दिनेश कुमार, तकनीकी अधिकारी ए, श्रीमती दीप्ती अरोड़ा, तकनीकी अधिकारी ए, श्री संजय कुमार, वरिष्ठ तकनीकी सहायक बी, तथा श्रीमती शालिनी छाबड़ा, प्रशासनिक सहायक बी शामिल थे।



## नए प्रशासनिक भवन का उद्घाटन

रक्षा अनुसंधान प्रयोगशाला (डी आर एल), तेजपुर



रक्षा अनुसंधान प्रयोगशाला (डी आर एल), तेजपुर में नए प्रशासनिक भवन का उद्घाटन करते हुए डॉ मानस कुमार मंडल, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं महानिदेशक (जीव विज्ञान)

डॉ मानस के मंडल, विशिष्ट वैज्ञानिक, महानिदेशक (जीव विज्ञान), डी आर डी ओ ने 5 दिसम्बर 2014 को रक्षा अनुसंधान प्रयोगशाला (डी आर एल), तेजपुर के तकनीकी परिसर में इसके नए प्रशासनिक भवन का उद्घाटन किया। इस समारोह में डॉ लोकेंद्र सिंह, उत्कृष्ट वैज्ञानिक, निदेशक (प्रशासन तथा तकनीकी), महानिदेशक (जीव विज्ञान) का कार्यालय; डॉ विजय वीर, निदेशक, डी आर एल तेजपुर; डॉ भुवनेश कुमार, निदेशक (पी एम), महानिदेशक (जीव विज्ञान) का कार्यालय तथा डी आर एल, तेजपुर के सभी अन्य अधिकारी और कर्मचारी उपस्थित थे। डी आर एल का नया प्रशासनिक भवन एक अत्याधुनिक तीन मंजिला भवन है जिसमें एक सम्मेलन कक्ष तथा एक प्रदर्शनी कक्ष भी निर्मित किए गए हैं। डॉ विजय वीर ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि इस प्रयोगशाला की एक चिर प्रतीक्षित मांग पूरी हो गई है तथा यह भवन प्रयोगशाला के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों की आवश्यकता को पूरा करेगा। सी सी ई (अनुसंधान तथा विकास) पूर्व कोलकाता ने पी एम यू, तेजपुर के साथ समन्वय स्थापित करके इस भवन के समग्र निर्माण कार्य पर निगरानी रखी।

### पाठकों की राय

आपकी राय हमारे लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे हमें इस पत्रिका को और अधिक उपयोगी तथा सूचनाप्रद बनाने तथा संगठन को बेहतर रूप में अपनी सेवा उपलब्ध कराने के अवसर प्राप्त होते हैं। डी आर डी ओ समाचार अपने सम्मानित पाठकों से प्रकाशित सामग्रियों तथा विषयों की गुणवत्ता के बारे में अपने सुझाव प्रेषित करने का अनुरोध करता है। कृपया अपने सुझाव निम्नलिखित पते पर भेजें:

संपादक, डी आर डी ओ समाचार, रक्षा वैज्ञानिक सूचना तथा प्रलेखन केंद्र (डेसीडॉक), मेटकॉफ हाउस, दिल्ली-110054  
ई-मेल : [director@desidoc.drdo.in](mailto:director@desidoc.drdo.in)

## आर ए सी में कैम्पस सेलेक्शन की ऑनलाइन व्यवस्था

विगत चार वर्षों से भी अधिक समय के दौरान के सतत प्रयास द्वारा इन्टरनेट और इंटरनेट के जरिए विभिन्न चयन कार्यक्रमों (भर्ती तथा मूल्यांकन) हेतु ऑनलाइन क्रियाकलापों को सफलतापूर्वक क्रियान्वित कर दिए जाने पर आर ए सी ने कैम्पस सेलेक्शन स्कीम के तहत डी आर डी ओ में वैज्ञानिक बी के चयन हेतु 48 संस्थानों (16 आई आई टी, 30 एन आई टी, भारतीय विज्ञान संस्थान और डी



आर ए सी में कैम्पस सेलेक्शन की ऑनलाइन व्यवस्था का दृश्य।

आई ए टी) में 4 जनवरी 2015 को कम्प्यूटर आधारित जांच परीक्षा (सी बी एस टी) का आयोजन किया। यह परीक्षा छह विषयों अर्थात् कम्प्यूटर विज्ञान, इलेक्ट्रॉनिक्स, एरोस्पेस, वैद्युत, यांत्रिकी और प्रायोगिक अभियांत्रिकी विषयों में आयोजित की गई और इसमें देश भर के 3000 से भी अधिक छात्रों ने भाग लिया।

## तेजस में नई पीढ़ी के इलैक्ट्रॉनिक युद्ध उपकरण संस्थापित

युद्ध वायुयान हेतु उड्डयनिकी तथा इलैक्ट्रॉनिक युद्ध प्रणालियों में विशेषज्ञता प्राप्त करने की दिशा में कार्यरत डी आर डी ओ की एक प्रयोगशाला रक्षा उड्डयनिकी अनुसंधान स्थापना (डेयर) द्वारा विकसित एक उन्नत इलैक्ट्रॉनिक युद्ध सेट (ई डब्ल्यू सेट) ने पहली बार बेंगलूरु में 10 जनवरी 2015 को तेजस पीवी 1 हलके युद्धक वायुयान (एल सी ए) पर ऑन बोर्ड उड़ान भरी।

इस परीक्षित ई डब्ल्यू सेट में रडार वार्नर के अतिरिक्त जैमर भी लगा हुआ है जो पायलट को जैमिंग की उपयुक्त विधि का प्रयोग करके संसूचित रडार खतरे के प्रभाव से बचने की अतिरिक्त क्षमता प्रदान करता है। वर्तमान में विभिन्न युद्धक वायुयानों पर लगी प्रणालियां बुनियादी ई डब्ल्यू उपकरण हैं जिन्हें रडार वार्नर रिसीवर के नाम से जाना जाता है जो पायलट को रडार खतरे के संसूचित होने की स्थिति में चेतावनी देता है।

उपर्युक्त उड़ान क्लियरेंस और प्रमाणन प्राप्त होने के बाद ई डब्ल्यू उपकरण से सुसज्जित एल सी ए पीवी 1 ने सैन्य अभियान के लिए भरे गए अपने पहले उड़ान में

ही उड़ान पथ पर और उसके आस-पास रेडार संकेतों को संसूचित किया।

रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार डॉ अविनाश चंद्र ने इस उपलब्धि के लिए टीम को बधाई दी और कहा कि इस युद्ध सेट से हमारे हलके युद्धक विमानों (एल सी ए) को एक महत्वपूर्ण क्षमता प्राप्त हुई है। श्री एस एस सुंदरम, विशिष्ट वैज्ञानिक, महानिदेशक (ई सी एस), डी आर डी ओ ने इसे तेजस पर सज्जित नई पीढ़ी का इलैक्ट्रॉनिक युद्ध उपकरण बताया। सुश्री जे मंजूला, उत्कृष्ट वैज्ञानिक, निदेशक, डेयर ने कहा कि एल सी ए भारत का पहला युद्धक वायुयान है जो रडार वार्नर तथा जैमर उपकरण से सुसज्जित है। इसमें एकीकृत ई डब्ल्यू प्रौद्योगिकी का प्रयोग करने के कारण रडार वार्निंग और जैमिंग दोनों की सक्षमता उपलब्ध हैं।

आगामी महीनों के दौरान वैमानिकी विकास एजेंसी (ए डी ए) और डेयर द्वारा विभिन्न सिग्नलों के संदर्भ में इस प्रणाली का मूल्यांकन करने के लिए और अधिक सैन्य अभियान से संबद्ध उड़ानों का आयोजन किया जाएगा।

## स्थापना दिवस समारोह

कृत्रिम ज्ञान तथा रोबोटिकी केंद्र (केयर),  
बैंगलूरु



श्रीमती उषा गणेश दीप प्रज्वलित कर स्थापना दिवस समारोह का उद्घाटन करती हुई।

कृत्रिम ज्ञान तथा रोबोटिकी केंद्र (केयर), बैंगलूरु ने 22 दिसम्बर 2014 को अपना स्थापना दिवस समारोह तथा कर्नाटक राज्योत्सव का अत्यधिक उमंग एवं उत्साह के साथ आयोजन किया। समारोह की शुरुआत एक प्रार्थना गान के साथ हुई जिसके पश्चात समारोह की अध्यक्ष, श्रीमती पद्मा देसीराजू, वैज्ञानिक जी द्वारा स्वागत भाषण दिया गया।

केयर के निदेशक, श्री संजय बर्मन, उत्कृष्ट वैज्ञानिक ने मुख्य अतिथि, श्रीमती उषा गणेश, आई ए एस (सेवा निवृत्त) तथा केयर के कर्मचारियों का स्वागत किया। इसके पश्चात मुख्य अतिथि ने अपना भाषण दिया। संस्थान के प्रतिभाशाली कर्मचारियों को डी आर डी ओ प्रयोगशाला स्तरीय पुरस्कार तथा निदेशक का सराहना पुरस्कार प्रदान किया गया।

सांध्यकालीन सत्र के दौरान, जो परिवार के सदस्यों के लिए खुला था, कर्नाटक राज्योत्सव समारोह तथा तकनीकी प्रदर्शनी आयोजित की गई। कोरामंगला वेलनेस सेंटर के डॉ राजेंद्र पी जोशी तथा डॉ जे ए आनंद अलवार सांध्यकालीन सत्र के मुख्य अतिथि थे। डॉ जोशी ने तनाव प्रबंधन विषय पर एक व्याख्यान दिया। श्री एन सीताराम, पूर्व विशिष्ट वैज्ञानिक तथा मुख्य नियंत्रक अनुसंधान एवं विकास (ई सी एस), डी आर डी ओ ने भी इस सत्र में भाग लिया। संस्थान के कर्मचारियों एवं उनके बच्चों द्वारा प्रस्तुत किए गए रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ समारोह का समापन हुआ।

रक्षा भू-भाग अनुसंधान प्रयोगशाला (डी टी आर एल), दिल्ली



डॉ चित्रा राजगोपाल, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, सीफीज, दीप प्रज्वलित कर स्थापना दिवस समारोह का उद्घाटन करती हुई।

रक्षा भू-भाग अनुसंधान प्रयोगशाला (डी टी आर एल), दिल्ली ने 27 मार्च 2015 को अपना 51वाँ स्थापना दिवस समारोह आयोजित किया। इस अवसर पर डॉ चित्रा राजगोपाल, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, सीफीज मुख्य अतिथि थी और डॉ आलोका नियोगी, निदेशक, क्वालिटी पीपल सॉल्यूशन्स, देहरादून विशिष्ट अतिथि के तौर पर सम्मिलित हुईं। साथ ही साथी प्रयोगशालाओं के निदेशकों एवं डी टी आर एल के पूर्व निदेशकगणों ने भी इस मौके पर उपस्थित होकर आयोजन की शोभा बढ़ाई। अपने उद्घाटन भाषण में डॉ एम आर भुटियानी, निदेशक, डी टी आर एल ने डी टी आर एल के मुख्य कार्यक्षेत्रों का ब्यौरा देते हुए वर्ष 2014 की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने डी टी आर एल टीम की प्रशंसा करते हुए कहा कि डी टी आर एल के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी अपने कार्यों के प्रति काफी समर्पित हैं और उन्हें अपनी टीम से भविष्य में भी काफी उम्मीदें हैं। मुख्य अतिथि, डॉ चित्रा राजगोपाल ने भी डी टी आर एल की वर्ष 2014 की उपलब्धियों की काफी प्रशंसा की। उन्होंने निदेशक डी टी आर एल समेत सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को उनकी सफलता के लिए बधाई दी और भविष्य में अधिकाधिक उपलब्धियों हेतु अपनी शुभकामनाएँ दीं। मुख्य अतिथि के उद्बोधन के बाद स्थापना दिवस के अवसर पर विशिष्ट अतिथि ने अनुसंधान एवं विकास नेतृत्व पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता के प्रभाव विषय पर एक व्याख्यान



स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर प्रयोगशाला पुरस्कार प्रदान करती हुई डॉ आलोका नियोगी, निदेशक, क्वालिटी पीपल सॉल्यूशन्स, देहरादून।

दिया। व्याख्यान के दौरान उन्होंने भावनात्मक बुद्धिमत्ता के प्रभाव पर देश-विदेश के विभिन्न संगठनों-संस्थाओं के अपने अनुभव बाँटे।

इसी मौके पर निदेशक, डी टी आर एल एवं डॉ आलोका नियोगी के द्वारा अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रयोगशाला स्तर के पुरस्कार, खेल-कूद के पुरस्कार एवं हिंदी के वार्षिक पुरस्कार वितरित किए गये।



श्री सुनील धर, वैज्ञानिक एफ, डी टी आर एल, स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर आयोजित कवि सम्मेलन में मंच का संचालन करते हुए।



आमंत्रित कवियों के साथ डॉ एम आर भुटियानी, निदेशक, डी टी आर एल। (दांये से चौथे)।

स्थापना दिवस समारोह के एक भाग के रूप में 27 मार्च 2015 को डी टी आर एल में एक कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस कवि सम्मेलन में बाहर से छह कविगण पधारे, जो समकालीन हिंदी साहित्य में जाने-माने नाम हैं—डॉ शिवशंकर मिश्र, डॉ अनामिका, श्री मदन कश्यप, श्री राधेश्याम तिवारी एवं श्री मधुवेश। इसके अलावा एस ए जी के एक अधिकारी डॉ सरताज उल हसन भी कविगण के बीच आमंत्रित थे। सभी कवियों ने बहुत अच्छी कविताएँ सुनाई, जिसमें कुछ मुक्त छंद की कविताएँ थीं तो कुछ गजलें। इस मौके पर साथी प्रयोगशालाओं से भी श्रोता आमंत्रित थे। मंच का संचालन प्रयोगशाला के ही सर्वाधिक लोकप्रिय आशु कवि श्री सुनील धर, वैज्ञानिक एफ ने किया। श्री धर ने भी संचालन के दौरान काफी अच्छी कविताएँ सुनायीं। इस कविता सत्र के दौरान प्रयोगशाला के कई अधिकारी एवं कर्मचारीगण भी उत्साहित होकर सामने आए और उन्होंने भी अपनी कविताएँ सुनाई।

## डी टी आर एल समाचार पत्र का विमोचन

### रक्षा भू-भाग अनुसंधान प्रयोगशाला (डी टी आर एल), दिल्ली

रक्षा भू-भाग अनुसंधान प्रयोगशाला (डी टी आर एल), दिल्ली में पहली बार डी टी आर एल अर्धवार्षिक समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। इसका विमोचन हिंदी कार्यशाला के मौके पर ही दिनांक 23 दिसंबर 2014 को डॉ एम आर भुटियानी निदेशक, डी टी आर एल के द्वारा किया गया। राजभाषा अधिकारी, श्री अनिल गोस्वामी एवं हिंदी कार्यशाला के अतिथि वक्ता श्री राजेश श्रीवास्तव ने भी विमोचन में निदेशक महोदय का साथ दिया।



श्री राजेश श्रीवास्तव, डॉ एम आर भुटियानी तथा श्री अनिल गोस्वामी, डी टी आर एल समाचार पत्र का विमोचन करते हुए (बांये से)।

## कर्नाटक राज्योत्सव

### वैमानिकी विकास स्थापना (एडीई), बेंगलूरु

वैमानिकी विकास स्थापना (ए डी ई), बेंगलूरु में 21 नवम्बर, 2014 को कर्नाटक राज्योत्सव का आयोजन किया गया। प्रसिद्ध कन्नड़ कवि डॉ सिद्धलिंगय्या इस समारोह के मुख्य अतिथि थे तथा महिला लेखिका संघ की अध्यक्ष श्रीमती वसुंधरा भूपति सम्मानित अतिथि के रूप में आमंत्रित की गई थीं। ए डी ई के निदेशक श्री पी श्रीकुमार, उत्कृष्ट वैज्ञानिक ने समारोह की अध्यक्षता की। श्री श्रीकुमार ने समारोह के मुख्य अतिथि तथा सम्मानित अतिथि दोनों का स्वागत किया। इस अवसर को स्मरणीय बनाने के लिए अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। बाद में सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं के विजताओं को अतिथियों द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए।



ए डी ई में कर्नाटक राज्योत्सव समारोह का आयोजन।

### रक्षा उड्डयानिकी अनुसंधान स्थापना (डेयर), बेंगलूरु

रक्षा उड्डयानिकी अनुसंधान स्थापना (डेयर), बेंगलूरु ने 5 दिसम्बर 2014 को कर्नाटक राज्योत्सव का आयोजन किया। डेयर ने राज्य की समृद्ध साहित्यिक तथा सांस्कृतिक विरासत को परम्परागत रूप में प्रदर्शित करते हुए इस समारोह को मनाया। कन्नड़ भाषा के जाने-माने स्तंभकार प्रो हल्दोदरी सुधीन्द्र ने इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में समारोह की शोभा बढ़ाई। श्री एस एस सुंदरम, विशिष्ट वैज्ञानिक, महानिदेशक (ई सी एस), डी आर डी ओ ने अपनी गारिमामयी उपस्थिति से इस समारोह को महत्ता प्रदान की। प्रो हल्दोदरी सुधीन्द्र ने कर्नाटक द्वारा की गई प्रौद्योगिकीय प्रगति के संबंध में अत्यधिक ज्ञान वर्धक प्रस्तुतीकरण दिया। आपने संगठन में कर्नाटक साहित्य और संस्कृति विषय पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजताओं को पुरस्कार भी प्रदान किए। समारोह का समापन संगठन के प्रतिभाशाली कर्मचारियों द्वारा प्रस्तुत किए गए मनमोहक कार्यक्रमों की प्रस्तुति के साथ हुआ।



डेयर में कर्नाटक राज्योत्सव समारोह का आयोजन।

## मानव संसाधन विकास गतिविधियाँ

### सम्मेलन/सेमिनार/विचार-गोष्ठी/प्रशिक्षण पाठ्यक्रम/बैठक

#### प्रतिभा प्रबंधन विषय पर परिचर्चा

कार्मिक प्रतिभा प्रबंधन केंद्र (सेपटेम), दिल्ली ने डॉ एस भगवंतम सभागार, मेटकॉफ हाउस, दिल्ली में 12-13 दिसम्बर 2014 के दौरान "अनुसंधान तथा विकास संगठनों में प्रतिभा प्रबंधन: वर्तमान पद्धति तथा भावी चुनौतियाँ" विषय पर एक परिचर्चा का आयोजन किया। संघ लोक सेवा आयोग के पूर्व अध्यक्ष, प्रोफेसर डी पी अग्रवाल ने इस परिचर्चा का उद्घाटन किया। डॉ डी एन रेड्डी, अध्यक्ष, भर्ती तथा मूल्यांकन केंद्र (आर ए सी), डी आर डी ओ; डॉ गुरबचन सिंह, अध्यक्ष कृषि वैज्ञानिक भर्ती बोर्ड (ए एस आर बी); डॉ मालकोंडैय्या, विशिष्ट वैज्ञानिक, मुख्य नियंत्रक अनुसंधान एवं विकास (एच आर), डी आर डी ओ; श्री राजवंत बी सिंह, अध्यक्ष सेपटेम उद्घाटन भाषण के दौरान उपस्थित अन्य विशिष्ट अतिथि में शामिल थे। श्री सुधीर गुप्ता, निदेशक सेपटेम ने समारोह में उपस्थित हुए, सभी विशिष्ट अतिथियों और प्रतिनिधियों एवं शिष्टमंडलों का स्वागत किया। अपने उद्घाटन भाषण में प्रो अग्रवाल ने संगठन के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सही प्रतिभा के चयन पर बल दिया।

डॉ गुरबचन सिंह ने प्रतिभा चयन तथा कैरियर संवर्धन स्कीम पर अपना प्रमुख भाषण दिया। डॉ डी एन रेड्डी ने अनुसंधान तथा विकास संगठन में प्रतिभा प्रबंधन की आवश्यकता पर बल दिया। डॉ जी मालकोंडैय्या ने

अनुसंधान तथा विकास संगठनों में मानव संसाधन विकास के महत्त्व पर प्रकाश डाला। श्री राजवंत बी सिंह ने प्रतिभा प्रबंधन हेतु परिचर्चा की आवश्यकता के बारे में बताया।

इस परिचर्चा में लगभग 25 प्रसिद्ध वक्ताओं, डी आर डी ओ के 283 प्रतिनिधियों तथा अन्य सरकारी/स्वायत्तशासी संगठनों/शैक्षणिक संस्थान तथा निजी क्षेत्र के 29 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। उद्घाटन सत्र में एक स्मारिका का भी विमोचन किया गया।

इस परिचर्चा (संगोष्ठी) का थीम मानव संसाधन विकास के चार प्रमुख पहलुओं अर्थात् प्रतिभा चयन एवं भर्ती पद्धति, निष्पादन मूल्यांकन एवं कैरियर प्रोन्नयन, कौशल संवर्धन एवं प्रशिक्षण विधि तथा समेकित दृष्टिकोण (नीति, प्रतिधारण, अभिप्रेरण, प्रतिबद्धता, अनुक्रम आयोजना, आदि) के रूप में मानव संसाधन प्रबंधन पर आधारित था।

प्रत्येक सत्र की अध्यक्षता डी आर डी ओ के विशेषज्ञों ने की तथा प्रसिद्ध वक्ताओं ने विभिन्न विषयों पर अपने विचारों और अनुभवों का उल्लेख किया। प्रत्येक तकनीकी सत्र के अंत में व्याख्यानों पर एक खुली चर्चा आयोजित की गई। विशिष्ट तकनीकी सत्रों में व्याख्यान प्रस्तुतकर्ताओं द्वारा लगभग 24 पोस्टर पेपर प्रस्तुतीकरण



प्रतिभा प्रबंधन पर परिचर्चा से संबंधित स्मारिका के विमोचन का दृश्य।

किए गए। समापन समारोह की अध्यक्षता सेपटेम के पूर्व अध्यक्ष श्री एस सी नारंग ने की जिनके साथ श्री राजवंत बी सिंह, अध्यक्ष, सेपटेम; श्री आर के जैन, उत्कृष्ट वैज्ञानिक, निदेशक, आर ए सी; डॉ श्रीमती हिना ए गोखले, निदेशक, डी एच आर डी; तथा श्री सुधीर गुप्ता, निदेशक, सेपटेम उपस्थित थे। परिचर्चा के संबंध में एक खुले सत्र तथा विचार-विमर्श कार्यक्रम का आयोजन किया गया। परिचर्चा की समाप्ति इसके संयोजक डॉ गंगा प्रसाद द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुई।

### संस्थिति निगरानी विषय पर राष्ट्रीय सम्मेलन



संस्थिति निगरानी विषय पर सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम।

संग्राम वाहन अनुसंधान विकास स्थापना (सी वी आर डी ई) चेन्नई तथा सी एम एस आई, विशाखापत्तनम ने समिति निगरानी विषय पर 18-19 दिसम्बर 2014 के दौरान संयुक्त रूप से एक राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया। सम्मेलन का उद्घाटन भारत के पूर्व राष्ट्रपति, डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम द्वारा किया गया जो इस सम्मेलन के मुख्य अतिथि थे। आपने सम्मेलन में अपना प्रमुख भाषण भी दिया। डॉ कलाम ने वाहनों में संस्थिति निगरानी के महत्व तथा अधिक विश्वसनीयता के लिए समेकित वाहन स्वास्थ्य निगरानी संबंधी अवधारणा पर विस्तार से चर्चा की। आपने त्रुटियों के बेहतर प्रबंधन के लिए "इंटरनेट ऑफ थिंग्स (आई ओ टी)" तथा इंटरनेट पर डेटा अंतरित करने के लिए कूट भाषा के प्रयोग के बारे में बताया। डॉ कलाम ने संस्थिति निगरानी विषय पर राष्ट्रीय सम्मेलन (एन सी सी एच) 2014" पर एक स्मारिका का विमोचन किया तथा इस अवसर को स्मरणीय बनाने के लिए एक पौधा भी लगाया।

इस अवसर पर डॉ वी भुजंगराव, विशिष्ट वैज्ञानिक, महानिदेशक (एन एस एंड एम), डी आर डी ओ तथा अध्यक्ष सी एम एस आई; श्री ए एम दातार, विशिष्ट वैज्ञानिक, महानिदेशक (ए सी ई), डी आर डी ओ; तथा डॉ पी शिवकुमार, उत्कृष्ट वैज्ञानिक निदेशक, सी वी आर डी ई एवं अध्यक्ष एन सी सी एम 2014 ने भी सम्मेलन में आए प्रतिनिधियों को संबोधित किया। डॉ. शिवकुमार ने सम्मेलन में आए प्रतिभागियों को अर्जुन एम बी टी मार्क-2 तथा अर्जुन कैटापुल्ट की प्रमुख विशेषताओं के बारे में संक्षेप में बताया तथा इन्हें मुख्य अतिथि एवं अन्य विशिष्ट जनों के समक्ष प्रदर्शित भी किया। डॉ कलाम ने इन वाहनों को विकसित करने में सी वी आर डी ई द्वारा किए गए प्रयास की सराहना की।

सम्मेलन में जिन विषयों पर चर्चा की गई उनमें समेकित वाहन स्वास्थ्य निगरानी, विश्वसनीयता केंद्रित निगरानी, संरचनात्मक स्वास्थ्य निगरानी, विद्युत संयंत्र स्वास्थ्य निगरानी, बैटरी लाइफ निगरानी आदि विषय शामिल थे। इस सम्मेलन में एस आर एम विश्वविद्यालय, हिंदुस्तान विश्वविद्यालय, वेल टेक, सत्यभाभा विश्वविद्यालय, टाटा स्टील, जिंदल स्टील वर्क, डिसॉल्ट, के पी आई टी, मर्लिनहॉक, रिलायंस, स्ट्रक्चरल सॉल्युशन्स, आई आर डी, बी ई एम एल, बी ई एल, डी आर डी ओ की विभिन्न प्रयोगशालाओं तथा मेडक स्थित आयुद्ध फैक्टरी से आए 350 से भी अधिक प्रतिनिधि शामिल हुए।

### नाभिकीय-जैविक-रासायनिक (एनबीसी) प्रतिरक्षा विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

रक्षा प्रयोगशाला, जोधपुर (डी एल) ने नाभिकीय - जैविक-रासायनिक (एन बी सी) प्रतिरक्षा विषय पर वायुसेना अधिकारियों/कार्मिकों के लिए 1-5 दिसम्बर 2014 के दौरान विशेषज्ञता पाठ्यक्रम का आयोजन किया। पाठ्यक्रम का उद्घाटन रक्षा प्रयोगशाला जोधपुर (डी एल जे) के निदेशक, डॉ एस आर वढेरा द्वारा किया गया। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों को नाभिकीय प्रतिरक्षा विषय में की गई प्रगति तथा नाभिकीय आपात प्रबंधन संकल्पनाओं एवं तकनीकों से अवगत कराना था जिसके दौरान प्रतिभागियों को मौलिक नाभिकीय भौतिकी एवं नाभिकीय विकिरण यूनितों, नाभिकीय विकिरण संसूचकों तथा मॉनिटरों, नाभिकीय



आयुधों में अभिलक्षण तथा प्रभाव, टी आर ई ई तथा ई एम पी प्रभाव, विकिरण के जैविक प्रभाव एवं प्रचालनात्मक सीमाओं, विकिरण संबंधी आपात स्थितियों में चिकित्सीय प्रबंधन, नाभिकीय जोखिम पूर्वानुमान माडलों आदि के बारे में जानकारी प्रदान की गई। इस दौरान समय, दूरी और प्रतिरक्षण संकल्पनाओं, रेडियो सक्रियता की खोज, नाभिकीय घटना निगरानी प्रणाली, स्लाइड रूल (परिकलन पट्टिका) तथा पराभव कैलकुलेटर, नाभिकीय यंत्र, मानव रहित वायुयानों (यू ए वी) का प्रयोग करके आकाश से निगरानी आदि के संबंध में प्रायोगिक प्रदर्शन भी किए गए। रक्षा प्रयोगशाला, जोधपुर की स्थानापन्न निदेशक श्रीमती अंजली भाटिया ने पाठ्यक्रम के समापन समारोह में प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र प्रदान किए।

श्री जी एल बहेती, वैज्ञानिक 'जी' तथा श्री डी के त्रिपाठी, वैज्ञानिक 'एफ' क्रमशः पाठ्यक्रम निदेशक तथा पाठ्यक्रम समन्वयक थे।

### महत्वपूर्ण रक्षा अनुप्रयोगों हेतु प्रकार्यात्मक सामग्री विषय पर सेमिनार



प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए डॉ जी मालकोंडैय्या।

रक्षा प्रयोगशाला, जोधपुर द्वारा 23 दिसम्बर 2014 को महत्वपूर्ण रक्षा अनुप्रयोगों हेतु प्रकार्यात्मक सामग्री विषय पर एक सेमिनार आयोजित किया गया। डॉ जी मालकोंडैय्या, विशिष्ट वैज्ञानिक, मुख्य नियंत्रक, अनुसंधान एवं विकास (एच आर), डी आर डी ओ इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे। आई आई टी जोधपुर के निदेशक प्रो सी वी आर मूर्ति ने इस समारोह की अध्यक्षता की। डी आर डी ओ अध्यक्षता तथा रक्षा प्रयोगशाला, जोधपुर के पूर्व निदेशक, डॉ नरेंद्र कुमार ने सेमिनार के

थीम पर अपना मुख्य भाषण दिया। रक्षा प्रयोगशाला, जोधपुर के निदेशक डॉ एस आर बढेरा, उत्कृष्ट वैज्ञानिक ने अतिथियों का स्वागत किया तथा उन्हें सेमिनार के उद्देश्यों से अवगत कराया।

सेमिनार का आयोजन दो तकनीकी सत्रों में किया गया जिनकी अध्यक्षता क्रमशः श्री जी एल बहेती, वैज्ञानिक 'जी' तथा सुश्री अंजली भाटिया, वैज्ञानिक 'जी' ने की। इन तकनीकी सत्रों में रक्षा प्रयोगशाला, जोधपुर द्वारा किए जा रहे अनुसंधान कार्यों से संबंधित सामग्रियों का सार मौलिक रूप में प्रस्तुत किया गया। तत्पश्चात आई आई टी-बी एच यू, आई आई टी कानपुर, आई आई टी-जोधपुर, बी आई टी एस पिलानी, गोवा कैम्पस, तथा राष्ट्रीय एरोस्पेस प्रयोगशालाओं के अनुसंधानकर्ताओं ने इस सेमिनार के थीम के संगत अपने अनुसंधान कार्यों का प्रस्तुतीकरण किया। आयोजन समिति के संयोजक डॉ आर विजय राघवन वैज्ञानिक जी ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

### अनुसंधान परिषद की बैठक

रक्षा प्रयोगशाला (डी आर एल), तेजपुर की अनुसंधान परिषद की दूसरी बैठक नई दिल्ली स्थित जीवन विज्ञान निदेशालय, डी आर डी ओ मुख्यालय के पूर्व निदेशक, डॉ ब्रह्म सिंह की अध्यक्षता में 15 दिसम्बर 2014 को आयोजित की गई।

इस बैठक में विशेषज्ञ सदस्य, डॉ आर एस चौहान, पूर्व वरिष्ठ वैज्ञानिक, डी आर डी ई

ग्वालियर; डॉ पी कुमार, वैज्ञानिक डी आर डी ई, ग्वालियर; तथा राष्ट्रीय कोशिका विज्ञान केंद्र, पुणे; डॉ वाई शाशे, वैज्ञानिक जी ने भाग लिया। रक्षा प्रयोगशाला, तेजपुर के निदेशक, डॉ विजय वीर ने सदस्यों का स्वागत किया तथा डी आर एल में चल रहे मौजूद अनुसंधान कार्यों तथा इस प्रयोगशाला के भावी कार्यक्रमों के बारे में एक संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। इसके उपरांत प्रयोगशाला के विभिन्न विभागों के प्रमुखों द्वारा प्रस्तुतीकरण किया गया।



अनुसंधान परिषद की बैठक का दृश्य।

अध्यक्ष ने डी आर एल द्वारा किए जा रहे वर्तमान प्रयासों और अनुसंधान कार्यक्रमों पर अपना संतोष व्यक्त किया। परिषद ने जीवन विज्ञान के क्षेत्र में भावी अनुसंधान एवं विकास कार्यक्रम तैयार करने के उपायों तथा कतिपय क्षेत्रों पर अधिक ध्यान देने का सुझाव दिया, जैसे कि कीट विज्ञान विषयक डेटाबेस की अन्य एजेंसियों के साथ साझेदारी, अधिक ऊंचाई पर अपनाई जाने वाली कृषि प्रौद्योगिकी, विषाणुरोधी भूत जोलोकिया को विकसित करना, जैव संपाचित्र प्रौद्योगिकी, जैव प्रतिरक्षा क्रियाकलाप, विकसित उत्पादों का वाणिज्यीकरण, जल की गुणवत्ता का अध्ययन करने के लिए प्रयोग में लाए जाने वाली नैनो सामग्री, आदि।

## संग्राम प्रतिरूपण तथा अनुकार विषय पर सी ई पी

पद्धति अध्ययन तथा विश्लेषण संस्थान (ईसा), दिल्ली द्वारा 01-05 दिसम्बर 2014 को संग्राम प्रतिरूपण

तथा अनुकार विषय पर एक सी ई पी पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। इस पाठ्यक्रम में वारगेमिंग डेवलपमेंट सेंटर, दिल्ली; वार सेंटर, चंडीमंदिर; सिमुलेटर डेवलपमेंट डिविजन, हैदराबाद; एकीकृत मुख्यालय, दिल्ली; डी आर डी ओ की सहायक प्रयोगशालाओं के

वैज्ञानिकों; महानिदेशक का कार्यालय, मिसाइल एंड स्ट्रेटेजिक सिस्टम्स, डी आर डी ओ, हैदराबाद तथा ईसा से आए प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

इस पाठ्यक्रम में शामिल किए गए विषयों में प्रणाली गति की प्रतिरूपण, संग्राम प्रतिरूपण, संयुक्त युद्ध प्रतिरूपण तथा अनुकार तकनीक, रणनीतिक आयोजना, अमूर्त प्रतिरूपण, अनिश्चित परिवेश में अनुकूलन तथा एम डी पी के साथ ऑटोमेटेड प्लानिंग आदि विषय शामिल थे। पाठ्यक्रम में मौजूदा संग्राम मॉडलों का मामला अध्ययन तथा जल, थल तथा वायु क्षेत्र में वारगेमिंग में इसकी उपयोगिता जैसे विषय भी शामिल किए गए। पाठ्यक्रम के दौरान आर सी आई, आई आई टी दिल्ली, आई डी एस ए और ईसा के विशेषज्ञों ने अपने व्याख्यान दिए।

सुरक्षित आवाजाही तथा स्थानीय अवधाव स्थिति का मूल्यांकन विषय पर विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन हिम तथा अवधाव अध्ययन स्थापना (सासे),



श्री जी एस मलिक, निदेशक ईसा (बीच में) के साथ संग्राम प्रतिरूपण तथा अनुकार विषय पर आयोजित सी ई पी के प्रतिभागीगण।

मनाली द्वारा द्रास-कारगिल सेक्टर में तैनात भारतीय सेना के 56 माउंटेन ब्रिगेड की सैन्य टुकड़ियों के लिए 01-05 दिसम्बर 2014 के दौरान "सुरक्षित आवाजाही तथा स्थानीय अवधाव स्थिति का मूल्यांकन" विषय पर एक विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस पाठ्यक्रम में 56 माउंटेन ब्रिगेड के विभिन्न यूनिटों से आए इकहत्तर प्रतिभागियों ने भाग लिया।

ब्रिगेडियर रंजीत सिंह, ब्रिगेड कमांडर ने सैन्य दलों को शिक्षित करने तथा अवधाव खतरे को कम करने में सासे के प्रयासों की सराहना की।

### एकदिवसीय हिंदी तकनीकी कार्यशाला



कार्यशाला की सी डी के विमोचन का दृश्य।

हवाई वितरण अनुसंधान तथा विकास स्थापना (ए डी आर डी ई), आगरा ने स्वदेश में विकसित रक्षा

उत्पादों और सेवाओं के गुणवत्ता नियंत्रण, आश्वासन, विकास और प्रमाणन विषय पर 28 नवम्बर 2014 को एक दिवसीय हिंदी तकनीकी कार्यशाला का आयोजन किया।

कार्यशाला का उद्घाटन डॉ एस सी सती, उत्कृष्ट वैज्ञानिक, निदेशक, ए डी आर डी ई, आगरा ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में डॉ सती ने "मेक इन इंडिया" हेतु आयोजना निर्माण पर बल देते हुए स्वदेश में विकसित किए गए रक्षा उत्पादों के लिए गुणवत्ता और प्रमाणन के महत्त्व का उल्लेख किया। श्री राजीव जैन, वैज्ञानिक एफ तथा श्री अरविंद कौशिक, वैज्ञानिक सी ने इस कार्यशाला के समन्वयक की भूमिका निभाई।

### इंडोक्रीप्ट 2014

गूढलेखन विज्ञान (क्रिप्टोलॉजी) विषयक 15वा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन "इंडोक्रीप्ट 2014" क्रिप्टोलॉजी रिसर्च सोसायटी ऑफ इंडिया (सी आर एस आई) के तत्वावधान में वैज्ञानिक विश्लेषण समूह (एस ए जी), दिल्ली द्वारा 14-17 दिसम्बर 2014 के दौरान आयोजित किया गया। इंद्रप्रस्थ इंस्टीच्यूट ऑफ इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी (आई आई आई टी) दिल्ली के निदेशक प्रो पंकज जलोट ने इस सम्मेलन का उद्घाटन किया। वैज्ञानिक विश्लेषण समूह के पूर्व तथा वर्तमान निदेशक, डॉ पी के सक्सेना तथा डॉ जी अतिथन ने सम्मेलन की सह अध्यक्षता की। यूनिवर्सिटी ऑफ अप्लाइड साइंसेज एंड आर्ट्स, नॉर्थ वेस्टर्न स्विट्जरलैंड एफ एच एन डब्ल्यू



प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए डॉ सैबल कुमार पाल।

के प्रोफेसर विलि मायर तथा आई आई टी खड़गपुर, के डॉ देवदीप मुखोपाध्याय ने संयुक्त रूप से कार्यक्रम अध्यक्ष की भूमिका निभाई। इस कार्यक्रम में पेरिस विश्वविद्यालय के प्रोफेसर क्लाउड कार्लेट, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के प्रो फिलिप रॉगवे, प्लासेन्सिया, आई एन आर आई ए, फ्रांस के प्रोफेसर मारिया नामा तथा ग्रैज यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, ऑस्ट्रिया के प्रो फ्लोरियन मंडल ने भी इस सम्मेलन में भाग लेकर इसकी शोभा बढ़ाई।

सम्मेलन में गूढ़ लेखन विज्ञान के विभिन्न पहलुओं को शामिल किया गया जैसेकि ब्लॉक एंड स्ट्रीम साइफर, पब्लिक की क्रिप्टोग्राफी, एलिप्टिक कर्व क्रिप्टोग्राफी, हैश फंक्शन और डिजिटल सिग्नेचर, गूढ़लेखन संबंधी प्रोटोकॉल, गूढ़ लेख विश्लेषण, गूढ़लेखन विज्ञान के सिद्धांत आदि। इडोक्रीप्ट 2014 में 25 विदेशी प्रतिनिधि तथा भारत के उद्योग, अनुसंधान संस्थाओं एवं शैक्षणिक संस्थाओं से आए 150 से भी अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

सम्मेलन की कार्यवाही स्प्रिंगर द्वारा एल एन सी एस श्रृंखला के खंड संख्या 8885 में प्रकाशित की गई है। डॉ सैबल कुमार पाल तथा डॉ (सुश्री) सुचेता चक्रवर्ती क्रमशः आयोजन अध्यक्ष तथा सचिव थे।

### हिंदी कार्यशाला का आयोजन

रक्षा भू-भाग अनुसंधान प्रयोगशाला (डी टी आर एल), दिल्ली में वित्तीय वर्ष 2014-15 की तीसरी कार्यशाला का आयोजन 23 दिसंबर 2014 को किया गया। कार्यशाला का विषय था यूनिकोड में फोनेटिक की बोर्ड के माध्यम से टंकण। इस विषय पर व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित वक्ता थे, श्री राजेश श्रीवास्तव, जो स्वास्थ्य एवं परिवार



हिन्दी कार्यशाला के दौरान मंच संचालन करती हुई श्रीमती अरुणकमल।

कल्याण मंत्रालय में सहायक निदेशक के पद पर कार्यरत हैं। कार्यशाला के उद्घाटन संभाषण ने प्रयोगशाला के निदेशक, डॉ एम आर भुटियानी ने बताया कि हमारे लिए हिंदी को अधिक से अधिक प्रयोग में लाने के लिए यूनिकोड का प्रयोग सीखना अत्यंत आवश्यक है और इसीलिए इस विषय का चयन विशेष तौर पर किया गया है।

श्री राजेश श्रीवास्तव ने यूनिकोड ही नहीं बल्कि इंटरनेट के माध्यम से राजभाषा विभाग के द्वारा उपलब्ध करायी गयी विभिन्न सुविधाओं से प्रयोगशाला के सदस्यों को परिचित कराया। यूनिकोड के विभिन्न फायदों चाहे वह इंटरनेट पर सर्च करने की, ई मेल भेजने की सुविधा, दुनिया में किसी भी देश में हिंदी की कोई फाइल भेजने की बात हो या फोनेटिक की बोर्ड की उपलब्धता, बस कंप्यूटर में थोड़े परिवर्तन के साथ यानी कंप्यूटर यूनिकोड एनेबल्ड होना चाहिए, सारी सुविधाएं उपलब्ध हो जाती हैं। उन्होंने उपस्थित सभी सदस्यों को इन सभी सुविधाओं की जानकारी देने के बाद इन सब के प्रयोग के लिए प्रोत्साहित भी किया।

### आभार

डी आर डी ओ समाचार का सम्पादक मंडल वर्ष भर नियमित रूप से प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं से संबंधित समाचार भेजने के लिए सभी संवाददाताओं, राजभाषा अधिकारियों, तथा प्रबुद्ध निदेशकगणों का आभार व्यक्त करता है।

## स्वच्छ भारत अभियान

### रक्षा उड्डयानिकी अनुसंधान स्थापना (डेयर), बेंगलूरु

प्रधानमंत्री के स्वच्छ भारत अभियान का अनुसरण करते हुए रक्षा उड्डयानिकी अनुसंधान स्थापना (डेयर) बेंगलूरु ने अपने कार्मिकों के लिए एक स्वच्छता अभियान कार्यक्रम आयोजित किया। इस दिशा में 01 दिसम्बर 2014 से शुरू एक पखवाड़े के अभियान को मूर्त रूप देने के लिए बारह टीमों बनाई गई तथा प्रत्येक टीम का नेतृत्व एक वरिष्ठ अधिकारी द्वारा किया गया। तदनुसार, डेयर की निदेशक सुश्री जे मंजुला, उत्कृष्ट वैज्ञानिक के नेतृत्व में गठित की गई पहली टीम ने 12 दिसम्बर 2014 को डेयर परिसर के सामने साफ-सफाई का कार्य किया। टीम के सभी सदस्यों ने इस



डेयर के आस-पास स्वच्छता अभियान का नेतृत्व करती हुई सुश्री जे मंजुला।

अभियान के लिए प्रधानमंत्री की अपील का तन-मन से अनुपालन करते हुए अत्यधिक उमंग एवं उत्साह के साथ इस अभियान में भाग लिया। इस अवसर पर स्वयं निदेशक द्वारा झाड़ू लेकर आस-पास के इलाके की काफी अच्छी तरह सफाई की गई जिससे प्रभावित होकर टीम के सभी सदस्यों ने आपस में प्रतिस्पर्धा करते हुए सफाई कार्य किया और इस प्रकार पहले निर्धारित किए गए क्षेत्र से भी अधिक क्षेत्र की साफ-सफाई कर दी गई।

## मोनोग्राफ का विमोचन

रक्षा प्रौद्योगिकियों के संबंध में वैज्ञानिक सूचना के संग्रहण और प्रसार के लिए डी आर डी ओ की नोडल स्थापना रक्षा वैज्ञानिक सूचना तथा प्रलेखन केंद्र (डेसीडॉक), दिल्ली ने "मानवरहित वायुयान प्रणाली : एक वैश्विक परिदृश्य" नाम से एक मोनोग्राफ प्रकाशित किया है। इस मोनोग्राफ में मानवरहित वायुयानों (यूए वी) की जटिल प्रौद्योगिकी के बारे में सार तथ्यों का उल्लेख किया गया है। इसमें विविध जानकारीयों उपलब्ध कराई गई हैं जो इस विषय के बारे में आरंभिक जानकारी प्राप्त करने की इच्छा रखने वाले नौसिखिया लोगों के लिए उपयोगी होने के साथ ही अन्य विषयों के बारे में सीखने की इच्छा रखने वाले अपने व्यवसाय में कार्यरत विशेषज्ञ इंजीनियरों तथा यू ए वी प्रौद्योगिकी के बारे में एक संपूर्ण जानकारी प्राप्त करने की इच्छा रखने वाले कार्यक्रम प्रबंधकों, नौकरशाहों, योजनाकारों एवं नीति निर्माताओं के लिए भी पर्याप्त उपयोगी है। यह यूएवी के आरंभिक आकार के लिए पद्धति अभियांत्रिकी विधि के संबंध में एक दृष्टिकोण भी प्रदान करता है।



इसके विद्वान लेखक जे. जयरमन हैं जिन्होंने वैमानिकी विकास स्थापना (ए डी ई) में स्वदेश में वैमानिकी प्रणालियों को विकसित करने के कार्य में पिछले चार से भी अधिक दशकों का अनुभव प्राप्त किया है। आपने इस मोनोग्राफ में अपने व्यवसाय में कार्यरत अभियांत्रिकियों द्वारा यू ए वी विकसित करने के दौरान सामना की जाने वाली वास्तविक जीवन की समस्याओं की झलक दिखाने के लिए सीखे जाने वाले विषय के संबंध में एक सूचनाप्रद अध्याय भी शामिल किया है। आईएसबीएन 978-81-86514-52-8; पृष्ठ : 536

## संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निरीक्षण

### रक्षा भू-भाग अनुसंधान प्रयोगशाला, दिल्ली



संसदीय राजभाषा समिति निरीक्षण का दृश्य।

दिनांक 21 फरवरी 2015 को संसदीय राजभाषा समिति की प्रथम उपसमिति के द्वारा रक्षा भू-भाग अनुसंधान प्रयोगशाला (डी टी आर एल), दिल्ली के राजभाषा संबंधी गतिविधियों का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण समिति की अध्यक्षता संसदीय राजभाषा समिति की प्रथम उपसमिति के उपाध्यक्ष, माननीय श्री सत्यनारायण जटिया ने की एवं इसके संयोजक श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी थे। प्रयोगशाला की ओर से निरीक्षण के में डॉ एल के सिन्हा, सह निदेशक, डॉ पी एन जोगलेकर, वैज्ञानिक जी, डॉ पी एन जोगलेकर, वैज्ञानिक एफ, श्री डी एन वर्मा, वैज्ञानिक एफ एवं संपर्क अधिकारी, श्री अनिल गोस्वामी, वैज्ञानिक डी एवं राजभाषा अधिकारी एवं श्रीमती अरुणकमल, वरिष्ठ हिंदी सहायक, डी आर डी ओ मुख्यालय से श्री सुनील शर्मा, निदेशक, राजभाषा एवं संगठन पद्धति निदेशालय, श्रीमती विनीता पोखरियाल, सहायक निदेशक एवं रक्षा मंत्रालय से श्री राघवेंद्र नारायण दुबे, संयुक्त सचिव (प्रशिक्षण) एवं श्री प्रभुदत्त भारद्वाज, (निदेशक, राजभाषा विभाग) सम्मिलित हुए।

समिति ने प्रयोगशाला में राजभाषा संबंधी प्रगति की सराहना की एवं कुछ बिंदुओं पर कुछ सुझाव प्रस्तुत किए। डॉ एल के सिन्हा ने उन्हें आश्वासन दिया कि उन सुझावों पर अवश्य कार्रवाई की जाएगी। कुल मिलाकर यह एक सफल एवं उत्साहवर्द्धक निरीक्षण रहा।

### उच्च अर्हता प्राप्ति

#### एकीकृत परीक्षण रेंज (आई टी आर), चांदीपुर

श्री सुखमय हाजरा, वैज्ञानिक 'डी', आई टी आर, चांदीपुर को उनके द्वारा "जर्कोन-एलुमिना पाउडर मिश्रण के प्लाज्मा छिड़काव से प्राप्त मलाइट लेपन का प्रक्रमण तथा अभिलक्षण निर्धारण" विषय पर लिखे गए शोध प्रबंध के लिए भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आई आई टी), खड़गपुर द्वारा पी एच डी की उपाधि प्रदान की गई है।



#### नौसेना विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला (एन एस टी एल), विशाखापत्तनम

श्री कडगल वेंकट श्रीनिवास, वैज्ञानिक बी, नौसेना विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला (एन एस टी एल), विशाखापत्तनम को उनके द्वारा "उच्च शक्ति उपयोगिता इंटरफेस हेतु वोल्टता स्रोत कन्वर्टरों का अभिकल्प एवं नियंत्रण" विषय पर लिखे गए शोध प्रबंध के लिए आई आई टी, दिल्ली द्वारा पी एच डी की उपाधि प्रदान की गई है।



#### हिम तथा अवधाव अध्ययन स्थापना (सासे), चंडीगढ़

श्री हेमंत सिंह गोसाई, वैज्ञानिक 'डी', हिम तथा अवधाव अध्ययन स्थापना (सासे) चंडीगढ़ को उनके द्वारा "हिम-मौसम पैरामीटरों का भूस्थानिक प्रतिरूपण तथा ऊर्जा फ्लक्सों का अनुमान" विषय पर लिखे गए शोध प्रबंध के लिए आई आई टी, रुड़की द्वारा पी एच डी की उपाधि प्रदान की गई है।



## पुरस्कार

### आई एन ए ई अध्येतावृत्ति



डॉ के तमिलमणि, विशिष्ट वैज्ञानिक, महानिदेशक (ऐरो), डी आर डी ओ तथा डॉ पी शिवकुमार, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, संग्राम वाहन अनुसंधान तथा विकास स्थापना (सी वी आर डी ई), चेन्नई को अभियांत्रिकी के क्षेत्र में इनके द्वारा किए गए विशिष्ट योगदान को मान्यता प्रदान करते हुए भारतीय राष्ट्रीय अभियांत्रिकी अकादमी (आई एन ए ई) द्वारा 01 जनवरी 2015 से आई एन ए ई के अध्येता के रूप में चयन किया गया है।



### सर्वोत्तम गृह पत्रिका शील्ड प्रतियोगिता

वैमानिकी विकास स्थापना (ए डी ई), बेंगलूरु की हिंदी गृह पत्रिका नभतरंग को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (टी ओ एल आई सी)—सी एस आई आर—एन ए एल, बेंगलूरु द्वारा आयोजित सर्वोत्तम गृह पत्रिका शील्ड प्रतियोगिता 2014 में तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया है। ए डी ई के निदेशक, श्री पी श्रीकुमार, विशिष्ट वैज्ञानिक को वर्ष 2014 हेतु आयोजित संयुक्त हिंदी दिवस समारोह में यह शील्ड प्रदान किया गया।



श्री पी श्रीकुमार, (दांये) नभतरंग के लिए पुरस्कार प्राप्त करते हुए।

## खेलकूद समाचार

### उत्तर क्षेत्र कैंरम टूर्नामेंट

रक्षा अनुसंधान प्रयोगशाला (डी आर एल), तेजपुर ने 10-12 दिसम्बर, 2014 के दौरान डी आर डी ओ उत्तरी क्षेत्र कैंरम टूर्नामेंट, 2014 का आयोजन किया। इस टूर्नामेंट में डी आर डी ओ की 10 प्रयोगशालाओं से आए 54 खिलाड़ियों ने भाग लिया। टूर्नामेंट में टीम चैंपियनशिप, सिंगल इवेंट (ओपन, वूमन और वेटेरन) और डबल इवेंट शामिल थे।

डॉ विजय वीर, निदेशक, डी आर एल ने अपने समापन भाषण में डी आर डी ओ में खेलकूद कार्यक्रमों के महत्त्व पर प्रकाश डाला। टूर्नामेंट के विजेताओं तथा उप-विजेताओं की सूची नीचे दी गई है :

श्रेणी	विजेता	उप-विजेता
पुरुष (एकल)	डॉ पारितोष मालवीय डी आर डी ई, ग्वालियर	श्री एस एन सिंह एस एस पी एल, दिल्ली
महिला (एकल)	सुश्री रीतिका वत्स एस एस पी एल, दिल्ली	सुश्री बर्नाली बैलंग डी आर एल, तेजपुर
पुरुष (युगल)	श्री विशंभर सिंह तथा श्री सुभाष नारायण डेसीडॉक, दिल्ली	श्री डी एल डबराल तथा श्री ए पी गुरंग, आई आर डी ई, देहरादून
वेटेरन (एकल)	श्री डी एल डबराल आई आर डी ई, देहरादून	श्री एन के चावला डेसीडॉक, दिल्ली



डी आर एल तेजपुर के निदेशक डॉ विजय वीर से प्रमाण-पत्र प्राप्त करते हुए श्री विशंभर सिंह, श्री सुभाष नारायण तथा श्री एन के चावला (बाएं से)।

## उत्तर क्षेत्र वॉलीबॉल प्रतियोगिता

यंत्र अनुसंधान तथा विकास स्थापना (आई आर डी ई), देहरादून द्वारा आयोजित उत्तर क्षेत्र बॉलीबॉल प्रतियोगिता में हिम तथा अवधाव अध्ययन स्थापना (सासे) मनाली को उप-विजेता घोषित किया गया। सासे के तीन खिलाड़ियों को राष्ट्रीय स्तर पर डीआरडीओ में उत्तर क्षेत्र वॉलीबॉल टीम का प्रतिनिधित्व करने के लिए चयनित किया गया। सासे के एन के विपिन कुमार का टूर्नामेंट के सर्वोत्तम खिलाड़ी के रूप में चयन किया गया।

## डी आर डी ओ की विभिन्न प्रयोगशालाओं / स्थापनाओं में पधारे अतिथिगण

वैमानिकी विकास स्थापना (ए डी ई), बेंगलूर कृत्रिम ज्ञान तथा रोबोटिकी केंद्र (केयर), बेंगलूर



अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ एरोनॉटिक्स एंड ऐस्ट्रोनॉटिक्स (ए आई ए ए) से भारत की यात्रा पर आया शिष्टमंडल।



रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार के समक्ष प्रदर्शन करते हुए डॉ दीप्ति देव धरे।

एरोनॉटिकल सोसायटी ऑफ इंडिया ने भारत के विभिन्न एरोस्पेस संगठनों के दौरे पर 3-13 दिसम्बर 2014 के दौरान की यात्रा पर संयुक्त राज्य अमरीका के अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ एरोनॉटिक्स एंड ऐस्ट्रोनॉटिक्स (ए आई ए ए) से भारत आए एक शिष्टमंडल की मेजबानी की। इस शिष्टमंडल ने 4 दिसम्बर 2014 को ए डी ई, जी टी आर ई तथा एच ए एल का दौरा किया। यह नौ सदस्यीय शिष्टमंडल ए आई ए ए के कार्यपालक निदेशक तथा पूर्व अंतरिक्ष यात्री डॉ (सुश्री) सैंडी मैग्नस के नेतृत्व में भारत की यात्रा पर आया था।

**05 दिसम्बर 2014** : रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार डॉ अविनाश चंदर। इस अवसर पर उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं केयर के निदेशक, श्री संजय बर्मन ने रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार को केयर द्वारा आसूचना प्रणालियों, रोबोटिकी, एन एम एस, आई सी सी एस, समुद्री प्रक्षेत्र जागरूकता आदि क्षेत्रों में विकसित की जा रही प्रौद्योगिकियों के बारे में संक्षेप में जानकारी दी।

मुख्य सम्पादक	सह मुख्य सम्पादक	सम्पादक	सहायक सम्पादक	सम्पादकीय सहायक	मुद्रण	विपणन
सुरेश कुमार जिंदल	विनोद कुमारी शर्मा	फूलदीप कुमार	अनिल कुमार शर्मा अशोक कुमार	संजय कटारे शालिनी छाबड़ा	एस के गुप्ता हंस कुमार	आर पी सिंह

श्री सुरेश कुमार जिंदल, निदेशक, डेसीडॉक द्वारा डी आर डी ओ की ओर से मुद्रित एवं प्रकाशित

प्रकाशक : डेसीडॉक, मेटाॉफ हाउस, दिल्ली-110054 ; दूरभाष : 011-23812252 ; फैक्स : 011-23813465 ; ई-मेल : director@desidoc.drdo.in